International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 37-39

अनूप अषेष के नवगीतों में नवीन बिम्ब ग्राह्यता एवं प्रतीक योजनाएं

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी

व्यवस्थापक और संपर्क अधिकारी, एम.पी. बिरला अस्पताल, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

अनूप अषेष के नवगीतों का अति निकटता एवं स्पर्शता के साथ रसास्वादन किया जाए तो, चराचर जगत की वह सुखद आनंद एवं मनमोहक महक का आलिंगन होने लगता है जो किसी अन्य कविता में दुर्लभ ही प्राप्त होता है। आपके सम्पूर्ण नवगीतों में नवीन बिम्ब विकास की झलक एक कोने से दूसरे कोने तक एवं एक छोर से दूसरे छोर तक एक–एक करके नये आयामों एवं मुकामों की मुलाकात कराता हुआ सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रतीकों की झाकियों की सज्जायुक्त संसार का भ्रमण तथा प्रभावी साक्षात्कार कराता है और वाचक एवं श्रोता को उस संसार से बाहर निकालने की इच्छा बिलकुल ही नहीं होती है जो हर पगडंडी जो आगे प्रतीकों के माध्यक से आगे–आगे चलती है। वह कहीं न कहीं एक बहुत बडे राष्ट्र मार्ग एवं विश्वमार्ग को जोड़ती है तथा पथिक अपनी यात्रा में नवीन विम्बों के माध्यम से अनेक प्रेरणा युक्त योजनाओं का साक्षात्कार करके आत्म विभोर होता है।

मूल शब्द: अनूप अषेष, नवगीतों, निकटता, स्पर्शता

प्रस्तावना

अनूप अषेष के नवगीतों ने अपनी राग वलय में बदल रहे जीवन गत सम्पूर्ण विम्ब धर्मिता को मुनष्य के साथ संष्लिष्ट कर एक प्राकृत सामूहिकता की तरह आविष्कृत किया है। नवगीत का विम्बात्मक प्रत्यय भारतीय जीवन के सातत्य का प्रत्यक्षीकरण है। वैसे तो कविता कैसी भी हो विम्ब रचना उसकी सामर्थ्य और शक्ति का एक चिर स्थायी प्रतिमान है।

बिम्ब–चेतना में कवि की रचनाधर्मिता की उस शक्ति का सर्वाधिक योगदान रहता है जिसे हम कल्पना कहते हैं। कल्पना एक ऐसी अन्तःकिया है जिसमें इंद्रिय संवेद्य संपूर्ण बाह्य प्रत्यक्ष, अनुभूति संवेदना स्मृत्याभास और सौंदर्येच्छा से रसायनीकृत होकर अप्रत्यक्षितः मानस–अवकाश में शक और अर्थ के सहारे एक समांतर दुनिया रचती है। अपनी यथार्थ दुनिया से अधिक संवेगक्षम दुनिया। पाष्चात्य एवं भारतीय समीक्षकों ने कल्पना को स्मृति, अवास्तव की जन्मदायी, रूप सर्जिका, अंतःसंवेद्यों की अन्वेषिका, अर्थभिधान कर्मी, हा्समान अनुभूति एवं पुनर्रचना की शक्ति के रूप में परिभाषित प्रकिया मात्र नहीं है –वह स्मृत्याख्यान की जटिल कियाओं के साथ प्रत्यक्षीभूत समकालिक संसार की सौंदर्यमूलक निष्पत्ति है।

इस अर्थ में कल्पना अवास्तविक सरोकारों की सर्जिका नहीं है। वह वास्तविक की अनुपस्थिति में उसे अनेक संस्तरणें में किस्टीलाईज करके शब्दोत्तर लोक में अभिव्यक्त करने की प्राचीन प्रकिया है। शब्दोत्तर लोक में जो पश्यत कैमरा है –उस कैमरे के डार्करूम में जो एक प्रिंट तैयार होता है, वह प्रिंट एक जैविक सत्ता की जाई अपने सम्पूर्ण में इंद्रिय सन्निकर्ष की संभावनाएं उत्पन्न करता है। यह टटका और गतिमान दृश्यालोक अपने–अपने अनुभव की भाषिक संरचना में प्रस्तुत करके ही बिम्ब को प्रकट करता है। सर्जना के क्षणों में अनुभूति के नाना रूप कवि की कल्पना पर आरूढ़ होकर जब शब्द, अर्थ के माध्यम से व्यक्त होने का उपक्रम करते हैं तो इस सक्रियता के फलस्वरूप अनेक मानस छबिया आकार ग्रहण करने लगती है। इन्हें ही काव्य–बिम्ब कहते हैं।

बिम्ब की बात को अनूप अषेष के नवगीतो में देखा जाए तो नवगीत की रचनात्कता के परिपेक्ष्य में बिम्ब की अवधारणा को लेकर ही सर्वाधिक काव्य सर्जना की गयी है। नवगीत की बिम्ब योजना की परख के लिए नवगीत के ऐतिहासिक बदलावों उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों और उसके परिपार्ष्व में चल रहे तमाम उन धटनाचक्रों को देखने से यह मालुम होता है कि नवगीतों की पहचान स्थापित होने में नवगीतकार ने काफी संधर्ष किया है। नवगीत की विकास यात्रा एवं विम्ब चेतना की विकास यात्रा है।

अनूप अषेष के नवगीत रचना को बिम्ब प्रधान रचना भी कहा जा सकता है।

> बिम्ब भर रहा।
> प्यार केही कहा जाय जाय केही प्यार कहा, रूप कॅउॅनौं न देखाय बम्ब भर रहा।।
> चाह के न देख पाई चाह राह भर रही, टूट–टूट कुछ पिराय ओही की कही।
> सुध गली बिसर जॉयॅ छोह जाय न सहा।।
> सरदपूॅनों का चॉदगा पूॅनों मा हेराय, खीर धरी खपरइलै चोरन कस रात खाय।
> (संदर्भ कं–01 –महॉकन्तार मा उपनहें– अनूप अषेष–पृ.कं.–23)

निराला, माखन लाल चतुर्वेदी, बच्चन, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, श्री नरेश मेहता आदि कवियों ने गीत–श्रृष्टि को निरंतर परंपरानुमोदक मार्ग से हटाकर नयी लीक देने की चेष्टा की है। इन चेष्टाओं में ही नवगीत के व्यक्तित्व का चौखटा निर्मित हो रहा था। इन कवियों ने निश्चित तौर पर बिम्व –सृजन की लोकगायिनी ताकत थी और इन्होने अपने–अपने जनपदों से प्राणोद लेकर अपने गीतों में बिम्बों का टटकापन दिया।

नवगीत नामकरण को लेकर जब बहस चल रही थी तब सन् 1958 में राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 'गीतागिंनी' के सम्पादकीय में नवगीत के नामकरण और उसकी प्रकृति के केंद्र बनाकर लिखा था –नवगीत नयी अनुभूतियों को प्रकिया में संचालित मार्मिक समग्रता का आत्मीयतापूर्ण स्वीकार होगा जिसमें अभिव्यक्ति के आधुनिक निकायों पर उपयोग औश्र नवीन प्रतिधियों का संतुलन होगा।

अनूप अषेष के नवगीतों में बिम्बात्मकता इतनी प्रभावी रूप से विद्यमान है कि कुछ गीतकारों ने नवगीत को बिम्ब–गीत कहने लगे थे। काव्य बिम्बों को बच्चन, अज्ञेय, धर्मवीर भारती और नरेश मेहता ने अपनी कृतियों के माध्यम सये बिम्बों को और अधिक प्रखर

बनाया। जब किन्दी कविता का वैचारिक केंद्र अपनी संप्रसारी सत्ताओं के निरंतर दबाव में एक कलाविहीन खंडित मध्य प्रदेश के भोय भोय को क्षरित कर हरा था, तब नवगीत रगात्मक और ज्ञानात्मक आत्मसत्ताओं के विस्तारीकरण में भारतीय जनपद की ऐतिह्य जातीय स्मृतियों के साथ समकालीन सांस्कृतिक संक्रमणों और तज्जन्य विरूपीकृत समाज के अंतविरोधों को अपने भास्वर भावलोक में समेट रहा था।

आपन पातर बॉस –बडेरी कउने दिशा मा घर बनवाई कउने दिशा दुआर।
क्चेहरी थाने कै मार।।
दिन के सुरिज रात के चन्द्रमा अपने भाग परधान, चार–हॉथ भुँई सम्मन आबै थरिआ भूँख सुखान।
आपन पातर बॉस–बडेरी सब हमार सरकार।।
(संदर्भ क्रं0–02, बांधव राग–अनूप अषेष–पृ.क्रं.–11)

भारतीय व्यक्ति और भारतीय प्रकृति के बदलते रिश्तों को नवगीत ने जीवंत प्रक्रिया की तरह ही आविष्कृत नहीं किया –उसको सजीव रचना पिण्ड के इंद्रिय संवेगों से संपूरित भी किया। नवगीत के पूर्ववर्ती गीतों में एक रूमानी नजरिया था–अपने यथार्थ के प्रति–अपने लोक के प्रति, निश्चय ही यह रूझान निराला और माखनलाल चतुर्वेदी में क्रमशः आत्मटूटन और वीरभाव के संदर्भ में ग्रहण की जा सकती है लेकिन इन दोनों कवियो में काव्य–बिम्बों का विस्कारण शक्ति लोकोन्मुखी ही थी। स्वतंत्रता पष्चात छठवें दशक में हमारे देश में अनेकानेक परिवर्तन हुए, देश की राजनैतिक स्थिति में बहुत बडा बदलाव आया, इसी से प्रभावित नवगीतकारों ने इसी परिवर्तन से सही गीत काव्य रचना तथा बिम्ब प्रधान रचना को निर्मित किया।

नवगीत का शैल्पिक संसार बिम्ब केंद्रित है। बिम्ब रचना–प्रक्रिया में अनुभुति और अभिव्यक्ति किसी यौगिक की तरह मिलते हैं। रचनागत सम्पूर्ण तनाव नवगीतों में बिम्ब के आकारों में ही फूटता है।

अनूप अषेष के नवगीत पूर्णतः विश्वधर्मी रचना है किंतु उसके बिम्ब पूर्ववर्ती कविता के समान अलंकृत, अनुकृत, रूढ़, अथवा काल्पनिक नहीं है। उसमें या तो ऐसे प्रातिभ बिम्बों का प्रयोग हुआ है जो पश्यंती वाक् के स्तर से अभिव्यक्त होने के कारण सर्वथा नवीन, अछूते और अकल्पनीय है या उसमें अधिकार यथार्थ जगत के अनुद्घाटित आयामों के अप्रयुक्त बिम्ब प्रयुक्त हुए है। जैसे–वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्र के जीवन बिम्ब महानगरों के त्रासद और नाटकीय बिम्ब तथा राजनीततिक सामाजिक विसंगतियों और विडम्बनाओं के सांकेतिक और छंदालक बिम्ब इन बिम्बों की पहचान ही नवगीत की सही पहचान है।

गाँव से नगर में आने वाले नवगीतकारों ने लोकजीवन के बिम्बों को ही अधिकतर अपने गीतों में समाविष्ट किया है। लोक प्रकृति के चटकीले चमकदार और अनेक वर्ण ध्वनियों के चाक्षुष बिम्बों की प्रधानता इस तरह की बिम्ब यात्रा में प्रयुक्त की। बिम्ब विधायिनी शक्ति ने विशेष प्रकार की गतिज ऊर्जा प्रदान की है। जैसे दृश्य बदलते है किंतु उनमें एक अंतर्सम्बंध होता है। इस अतंर्सम्बंध के कारण कोई भी दृश्य स्वतंत्र और निरपेक्ष नहीं है। प्रकृति की स्वाभाविक लय को पकड़ने के लिए दृश्यों की इसी अंतर्लय को नवगीतकार ने पकड़ा है। दृश्य की स्वायत्तता के साथ उसने दृश्य की प्रकर्ष क्षमता और प्रस्तार क्षमता का भी ध्यान रखा है। इस प्रस्तरण में कब एक दृश्य दूसरे दृश्य में बदल गया, इसका सहज अनुमान नहीं लग पाता और एक स्वाभाविक एवं प्रकृत विकास में बिम्ब हस्तक्षेप नहीं कर पाता। वर्षा की धूप तिकोनी, चतुष्कोणी, ललछौही, पीताभ, सुरमई, बैंजनी, अटारी पर मुडेंर पर, फुनगी पर इस तरह दिखाई देती है कि इसे प्रत्येक स्थिति में कमी लगाकार व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह प्रकृति का एक समग्रक्षण में घटित होने वाला विस्तार है। इस क्षण–विस्तार को समेटने में नवगीतकार शब्दों की अल्पता में उसके विस्तृत अर्थ को केंद्रित करने की दाब शक्ति का इस्तेमाल करता है। क्रियाओं का कम से कम प्रयोग ताकि दृश्य परिवर्तन का अनुभास न हो सके। मात्र दृश्य–नियोजन की नवगीतकार अनूप जी लक्ष्य नहीं था। वरन् इन दृश्यों के साथ व्यक्ति चेतना के आदिम सम्बंधों की उजास भी झलक मारती रहती है। दृश्यों की मिक्सिंग में व्यक्ति चेतना के अनेक हिस्से दृश्य की अनिवार्य आवश्यकता बनकर उपस्थित होते हैं। दृश्य और व्यक्ति–संस्कार घुल मिलकर प्रकृति और पुरूष की युगनद्व लीला का विस्तृत संसार खोलते हैं। इस संसार में व्यक्ति घृणा, कुत्सा, प्रेम, उन्माद, काम और भावनाओं से उत्पन्न अनेक उत्प्रेरण निहित होते हैं और ये उत्प्रेरणायें नवगीतों के दृश्यायोजन में अपनी सक्रिय हिस्सेदारी रखती है।

अनूप अषेष के नवगीतों में गाँव की सुबह, शाम, दोपहर, गाँव के वृक्ष, हवा, नदी–नाले, गाँव के मेड़, खेत, खलिहान, फसलें, गाँव के घर पौंर परछत, गाँव के हल बैल....., अलगनी,..... चौखट, गांव के चबूतरे, देवथान गौठान न जाने कितने–कितने दृश्यों का विनियोजन बदलती प्रकृति के साथ लोक धर्मी बिम्बों के अंतर्गत समाहित हो जाते हैं।

सकारे के राम सॉझ नमस्ते लिहा सकारे के राम–राम।।
दुपहर जूना का चाही धुँकना फारैं मुँडेर रोटी–पानी सैंइंथ रोज–रोज होत देर।
या अबेर मा बॉच्या ऑखी–भर काम–काम।।'
(संदर्भ क्रं.–3, दुपहर–अनूप अषेष– पृ.क्रं.–17)

इसी प्रकार से–

'गॉव शहर मा बदलगे, टूट गई चउपाल।
रिस्ता तो सब धुऑ भे, छानीं मा तिरपाल।।
खेतबा जोतैं का पडा, रहा मा है धान।
बनिऑ तउलै व्याज मा, पानी मा परधान।।'
(संदर्भ क्रं–04, बांधव राग–अनूप अषेष –पृ.क्रं.–89)

इस तरह के बिम्बांकन में अधिकतर काले, नीले, बैंगनी, चिकबरे, धुआँधारे, सेंदूर वर्णी रंगों का प्रयोग किया गया है। दृश्यों में उभरती रेखाओं को बारीकी से उकेरने की चेष्टा नवगीतकार ने सधे हाथों से की है। सामान्यतः दृष्टि ओझल पेड, पौधे, कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी, नवगीतकार की बिम्ब–चेतना में अंतर्मुक्त हैं। सोनापतारी, बबूल, सेंहुड, सहजन, पंडुक जैसे वस्तुसंदर्भ बिम्ब–रचना के आधार बनते हैं।

डॉ. शभुनाथ सिंह के गीतों में बिम्बविधान दो स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। प्रथम स्तर पर उन्होंने आंचलिक गीतों में बिम्ब निर्माण प्राकृतिक उपादानों एवं लोक अभिप्रायों से किया है। दूसरे स्तर पर आधुनिक युगबोध की अभिव्यंजना हेतु गीतों में यथार्थ परिवेश की निर्मित के लिए आधुनिक वैज्ञानिक जीवन–संदर्भों के प्रयोग से बिम्ब योजना की है। यथार्थ जीवन के उपादानों से निर्मित एक बिम्ब दृष्टव्य है।

ये छतों–झूलती रस्सियां काट दें,
इन घरों में खुदी खाइयां पाट दें
हाट में बाट में द्वार पर ऑगने
ये उगी जंगली झाडियां काट दें।'
(संदर्भ क्रं.–05, जहाँ दर्द नीला है–डॉ. शभुनाथ सिहं पृ.क्रं. 41)

इस प्रकार अनेक नवगीतकारों के काव्य में बिम्बधर्मिता हेतु प्रकृति ने अहम् भूमिका निभायी है। अनूप अषेष, उमाशंकर तिवारी, आदि के नवगीत स्वरूप देखे जा सकते हैं। प्रकृति के साक्ष्य में जहां नवगीतों में मार्दव आया है, वहीं प्रकृति के साथ आधुनिक जीवन के वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यापारों का भी मेल है जो नवगीत का अपना वैषिष्ट्य है।

नवगीत के बिम्ब विधान में वैविध्य–विभिन्न बिम्बों की झलक नवगीत में देखी जा सकती है। अन्य ऐंद्रिय बिम्बों की अपेक्षा दृश्य अर्थात चाक्षुष बिम्ब अधिक मूर्त एवं मांसल होते हैं। ये बिम्ब पाठक पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

हर कवि की प्रतिभा और रूचि के अनुसार उसके काव्य में दृश्य बिम्बों का आयोजन होता है, किसी को स्थूल चित्रण में रूचि होती है, किसी की सूक्ष्म, किसी को प्रकृति, नारी, ग्राम और शहर के दृश्यांकन में रूचि होती है। इनमें कवि का तन्मय भाव स्पष्ट होता है। देवेन्द्र कुमार, रामचंद्र चन्द्रभूषण, भगवान स्वरूप, उमाकांत मालवीय आदि के गीतों में प्राकृतिक दृश्य बिम्ब अधिक है। गुलाब सिहं, नईम, शंभुनाथ सिंह, धर्मवीर भारती आदि के गीतों में ग्राम दुश्यों का प्राचुर्य है।

> 'थिर है नदिया का जल जामुनी तिरती रे छाया मन भावनी याद नहीं आता क्या चांदनी।'
> (संदर्भ क्रं.–06, बंशी और बादल–ठाकुर प्रसाद सिंह–पृ.क्रं–16)

> इतना छोटा सा/आकाश मिला हम अपने पंख कहां खोलें सिर्फ फड़ फड़ाकर रह जाते हैं जैसे गूंगों की/प्रार्थना सभा में हिलते हैं होंठ मगर बोल नहीं पाते हैं।

स्पर्श बिम्ब : कबि की तीव्र एवं सूक्ष्म स्पर्शजन्य अनुभूति से स्पर्श बिम्बों की सृष्टि होती है या स्पर्ष से संबंधित काव्य चित्र इनके अंतर्गत आते हैं –

> 'बनवासी प्यार कहीं भटक गया मानव मन चूनर के छोर में अटक गया आए यदि प्रीतम होगा भुनसार पाकर के डार जल दर्पण टेरी रही।'

प्राणमूलक बिम्ब : सूक्ष्म एंद्रिय से युक्त प्राणमूलक बिम्ब काव्य–चित्र को प्राणवन्त बनाने में समर्थ होते हैं। मानव एवं प्रकृति संबंधित गुणों का इनमें समावेष होता है। नवगीत में इनकी प्रचुरता है।

यर्थाथ बिम्ब : यथार्थ बिम्ब यथार्थ तथा शुष्क चित्रण से युक्त होता है। वस्तु बिम्ब के शुष्क उदाहरण गीत काव्य में कम ही मिलते हैं। यह कुछ ही हमारे यहां अलंकारों में वर्णित स्वभावोक्ति अलंकार से मेल रखते हैं। यथा तथ्य व्यंजक– यथार्थ बिम्ब –यथा –

> 'गमलों को धूप से हटा दो बुझी हुई अंगीठी जला दो गर्द झाड़ दो इन परदों की बिस्तर की सजावटें मिटा दो।'

अलंकृत बिम्ब : बाह्य स्थूल की अपेक्षा अंतर से सूक्ष्म भावों महत्व देने और विशेष आग्रह के अनेक सौंदर्य–उद्घाटन से अलंकृत बिम्बों की सृष्टि होती है। सभी कवियों के काव्य में अलंकृत बिम्ब समान रूप से प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के मनोराज्य से संबंधित ये इंद्रिय ग्राह्य कम होते हैं किंन्तु समय प्रभाव डालने में समर्थ होते हैं। काव्यानुभव भी इसकी तुष्टि करता है।

अनूप अषेष के नवगीत तो सम्पूर्ण बिम्बों का भंण्डार है इनके सम्पर्ण नवगीतों में नये नये प्रकार के बिम्बों का प्रादुर्भाव हुआ है। अतः अनूप अषेष के नवगीत तो पूर्णतः बिम्बधर्मी काव्य है। उनके बिम्ब पुर्ववर्ती कविता के समान अलंकृत, अनुकृत नहीं है। नवगीतों की बिम्बात्मकता प्रबल है। जिनकी प्रतीक योजनाएं भी प्रबल एवं सम्पूर्ण काव्य संसार में अलंकृत है।

संदर्भ सूची

1. महा कन्तार मा उपनहें– अनूप अषेष–पृ.क्रं.–23।
2. बांधव राग – अनूप अषेष –पृ.क्रं.–11।
3. दुपहर –अनूप अषेष –पृ.क्रं.–17।
4. बांधव राग – अनूप अषेष–पृ.क्रं.–89।
5. जहाँ दर्द नीला है– डॉ0 शभुनाथ सिंह–पृ.क्रं.–41।
6. बंषी और बादल– ठाकुर प्रसाद सिंह–पृ.क्रं–16।